Click here to go back

सूर्य मंत्र - Devanagari

अथ सूर्य मंत्रः>

ओं अस्य श्री सूर्य महामंत्रस्य हिरण्यस्तूप ऋषिः। त्रिष्टुप्छंदः सूर्यो देवता। घ्रीं बीजं। णीं शक्तिः। सूं कीलकं। मम सूर्य प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥ (करन्यासः) सूर्याय अंगुष्ठाभ्यां नमः। तेजोमूर्तये तर्जनीभ्यां नमः। वरदाय मध्यमाभ्यां नमः। हंसाय अनामिकाभ्यां नमः। शांताय कनिष्टिकाभ्यां नमः। कर्मसाक्षिणे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ (अंगन्यासः) सूर्याय हृदयाय नमः। तेजोमूर्तये शिरसे स्वाहा। वरदाय शिखायै वषट्। हंसाय कवचाय हुं। शांताय नेत्रत्रयाय वौषट्। कर्मसाक्षिणे अस्त्राय फट्। भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्भंधः॥ (ध्यानं) द्विभुजं पद्महस्तं च वरदं मकुटान्वितः। ध्यायेद्दिवाकरं देवं सर्वाभीष्ट प्रदायकं॥ (लमित्यादि पंच पूजा) ओं लं पृथ्वितत्वात्मने गंधान्धारयामि। ओं हं आकाशतत्वात्मने पुष्पं समर्पयामि। ओं यं वायुतत्वात्मने धूपमाघ्रापयामि। ओं रं वह्नितत्वात्मने दीपन्दर्शयामि। ओं वं अमृततत्वात्मने अमृतनैवेद्यं समर्पयामि। सर्वतत्वात्मने सर्वोपचार पूजां समर्पयामि॥ आसत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सवितारथेनादेवो याति भुवना विपश्यन्। इति सूर्य मंत्रः॥

For Qualitative Predictions & Potential Remedies visit:
www.astrovidya.com
Click here to go back